

हफ्तावार रिमाळा : 382
Weekly Booklet : 382

Chori Dakaiti (Hindi)

चोरी डकैती

(सफ़्हात : 27)



पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(दावते इस्लामी इन्डिया)

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى خَاتَمِ النَّبِيِّينَ ط
 مَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

चोरी डकैती

दुरूद शरीफ की फज़ीलत

“सअदतुद्दारैन” में है कि جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ एक शख्स दरबारे रिसालत में हाज़िर हुवा فَشَكَاَ إِلَيْهِ الْفَقْرَ وَضَيْقَ الْعَيْشِ وَالْمَعَاشِ और फ़करो फ़ाक़ा और तंगिये मआश की शिकायत की। तो **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : إِذَا دَخَلْتَ مَنْزِلَكَ فَسَلِّمْ إِنَّ كَانَ فِيهِ أَحَدٌ أَوْ لَمْ يَكُنْ فِيهِ أَحَدٌ : या'नी जब तुम अपने घर में दाख़िल हो तो السَّلَامُ عَلَيْكُمْ कह लिया करो चाहे घर में कोई हो या न हो, फिर मुझ पर सलाम कहा करो और एक मरतबा “قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ” पढ़ लिया करो। उस शख्स ने ऐसा ही किया तो **अल्लाह** पाक ने उस पर रिज़क़ खोल दिया हत्ता कि उस के हमसायों और रिश्तेदारों को भी उस रिज़क़ से हिस्सा पहुंचा। (سعادة الدارين، ص 84)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ﷺ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

सातवें आस्मान का फिरिश्ता

सहाबिये रसूल हज़रते जैद बिन हारिसा رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने एक मरतबा सफ़र के लिये त़ाइफ़ से एक ख़च्चर किराए पर लिया, ख़च्चर वाला डाकू था, वोह आप को सुवार कर के ले चला और एक वीरान व सुन्सान जगह पर ले जा कर ख़च्चर से उतार दिया और आप की तरफ़ ख़न्जर ले कर हम्ले के इरादे से बढ़ा, वहां हर तरफ़ लाशों के ढांचे बिखरे पड़े थे, आप ने उस से फ़रमाया : ऐ शख्स ! तू मुझे क़त्ल करना चाहता है तो मुझे इतनी मोहलत

दे दे कि मैं दो रक़अत नमाज़ पढ़ लूं। उस बंद नसीब ने कहा कि अच्छा तू नमाज़ पढ़ ले, तुझे से पहले भी बहुत से मक्तूलों ने नमाज़ें पढ़ीं थीं मगर उन की नमाज़ों ने उन की जान न बचाई।

हज़रते जैद बिन हारिसा رَضِيَ اللهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं : जब मैं नमाज़ से फ़ारिग़ हुवा तो वोह क़त्ल करने के लिये मेरे करीब आ गया, मैं ने दुआ मांगी और “يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ” कहा। ग़ैब से आवाज़ आई : ऐ शख़्स ! तू इन को क़त्ल मत कर। डाकू येह आवाज़ सुन कर डर कर इधर उधर देखने लगा, जब कोई नज़र न आया तो वोह फिर मुझे क़त्ल करने के लिये आगे बढ़ा, मैं ने दोबारा बुलन्द आवाज़ से “يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ” कहा, फिर ग़ैबी आवाज़ आई। तीसरी मरतबा जब मैं ने “يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ” कहा तो मैं ने देखा कि एक शख़्स घोड़े पर सुवार है, उस के हाथ में नेज़ा है और नेज़े की नोक पर आग का एक शो'ला है। उस शख़्स ने आते ही डाकू के सीने में इस ज़ोर से नेज़ा मारा कि नेज़ा उस के सीने को चीरता हुवा पार निकल गया और वोह डाकू ज़मीन पर गिर कर मर गया। फिर वोह सुवार मुझ से कहने लगा कि जब तुम ने पहली मरतबा “يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ” कहा तो मैं सातवें आस्मान पर था, जब दूसरी मरतबा तुम ने “يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ” कहा तो मैं आस्माने दुन्या पर था और जब तीसरी मरतबा तुम ने “يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ” कहा तो मैं तुम्हारे पास तुम्हारी मदद के लिये आ गया।

(117/2, الاستيعاب في معرفة الاصحاب, करामाते सहाबा, स. 322)

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत हो। اٰمِيْنَ بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

क्यूंकर न मेरे काम बनें ग़ैब से हसन बन्दा भी हूं तो कैसे बड़े कारसाज़ का

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

चोरों और डाकूओं के मज़ालिम

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह पाक के मुबारक नाम की बरकतों से बड़ी बड़ी मुसीबतें दूर हो जाती हैं। ज़ाहिरी अस्बाब इख़्तियार करने के साथ साथ **अल्लाह** पाक की बारगाह में अपनी परेशानी दूर होने की इल्तिजा भी करनी चाहिये। बारहा ऐसी ग़ैबी इमदाद हो जाती है कि बन्दा हैरान रह जाता है। गुज़श्ता वाक़िए में ज़ालिम डाकू की मौत का बड़ा इब्रत नाक बयान है। अफ़सोस ! कई परेशानियों और दुखों के इलावा चोरों, डाकूओं ने अस्लहे के ज़ोर पर छीना झपटी कर के मुख़्तलिफ़ तरह की जेहनी, जिस्मानी तक्लीफ़ों के साथ साथ महंगाई से परेशान अ़वाम में ख़ौफ़ो हिरास फैला रखा है। आए दिन चोरी, डकैती की ख़बरें सुनने को मिलती हैं बल्कि सोशल मीडिया पर अब ऐसी वीडियोज़ का सिल्लिसला बंध गया है। कहीं किसी ग़रीब के घर में घुस कर बच्ची का जहेज़ जिसे वालिद और भाई खून पसीना बहा कर जम्अ करते हैं, उसे लूट कर ले जाते हैं और कहीं मेहनत मज़दूरी करने वाला तनख़्वाह ले कर खुशी खुशी घर जा रहा होता है तो रक़म छीन कर यह ज़ालिम उस ग़रीब की खुशी को ग़म में बदल देते हैं। याद रखिये ! चोरी, डकैती ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। **अल्लाह** पाक **सूरतुल बक़रह**, आयत नम्बर 188 में इर्शाद फ़रमाता है : ﴿وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ﴾ तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और आपस में एक दूसरे का माल नाहक़ न खाओ।

तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में है : इस आयत में बातिल तौर पर किसी का माल खाना ह़राम फ़रमाया गया ख़्वाह लूट कर हो या छीन कर, चोरी से या जूए से या ह़राम तमाशों या ह़राम कामों या ह़राम चीज़ों के बदले

या रिश्वत या झूटी गवाही से येह सब मम्मूअ व हराम है ।

(तफ्सीरे ख़ज़ाइनूल इरफ़ान, पारह : 2, तहतल आयह : 188, स. 52)

जुल्मो सितम की आंधियां चला कर अस्लहे के ज़ोर पर या किसी भी तरह से चोरी, डकैती करने वालों को खुदाए अहूकमुल हाकिमीन की खुफ़या तदबीर (या'नी छुपे फैसले) से डरना चाहिये, ज़िन्दगी का भरोसा नहीं, मौत किसी वक़्त और कहीं भी आ सकती है, न जाने किस गोली पर आप का नाम लिखा हो ! अख़्बारात में ऐसी ख़बरें भी आती हैं कि अपने ही साथी डाकू की गोली लगने से दूसरा डाकू मारा गया और कभी चोर, डाकू पोलीस की गोली का शिकार हो कर अपने अन्जाम को पहुंच जाते हैं । चोरों की बुराई के लिये इतना ही काफ़ी है कि **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मुहम्मदे अरबी **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया : चोर पर **अल्लाह** पाक ने ला'नत फ़रमाई है ।

(مسلم، ص 716، حديث: 4408)

अरिज़ी खुशियों और फ़ानी दुन्या की ख़ातिर चोरी, डकैती के ज़रीए हराम माल जम्अ करने वालों को ख़ौफ़े खुदा से घबरा कर बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में सच्चे दिल से तौबा कर लेनी चाहिये कि अगर **अल्लाह** पाक की रहमत से दूर हो गए तो मरने के बा'द क्या बनेगा ? अगर क़ब्रों हशर में अज़ाबे इलाही में गिरिफ़तार हो गए तो फिर कौन बचाएगा ? कम खा कर, हलाल रोज़ी कमाने की फ़िक्र करनी चाहिये, माले हराम से लाखों, करोड़ों रुपै हासिल कर के ऐश भरी ज़िन्दगी गुज़ार भी ली फिर भी एक दिन मरना है, क़ब्र में मालो दौलत साथ नहीं जाएगा, यकीन न आए तो किसी मय्यित का कफ़न देख लीजिये । क्या आप ने कभी किसी कफ़न में जेब देखी है ? न जाने किस मज़्लूम की बददुआ आप के लिये दुन्या व

आखिरत की बरबादी व हलाकत का बाइस बन जाए। चोरों, डाकूओं और इस तरह के जुल्मो सितम ढाने वालों की जिन्दगी और मौत दोनों बड़ी काबिले मज्मूत होती हैं। चूहों, बिल्लियों की तरह छुप कर जिन्दगी गुजारते हैं बल्कि कभी पोलीस या अंजाम के हाथों ऐसी इब्रत नाक मौत मारे जाते हैं कि रूह कांप जाती है। वैसे भी इन बद नसीबों के मरने पर लोगों को गुम भी नहीं होता। **अल्लाह** करीम तमाम आशिकाने रसूल की हिफाजत फरमाए और हम सब को ज़ालिमों के जुल्म और चोरी डकैती वगैरा आफ़ातो बलिय्यात से महफूज फरमाए। **अल्लाह** पाक हमें ईमानो आफ़ियत के साथ सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के साए में, जल्वए महबूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ में शहादत की मौत नसीब करे और हमारा मदफ़न ख़ैर से जन्नतुल बक़ीअ बनाए। **أَمِينٌ بِجَاوِحَاتِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**।

दुनिया में हर आफ़त से बचाना मौला उक़्बा में न कुछ रन्ज दिखाना मौला
बैठूँ जो दरे पाके पयम्बर के हुज़ूर ईमान पर उस वक़्त उठाना मौला

(हदाइके बख़्शाश, स. 445)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

डाकूओं का अन्जाम

बन्दों पे जुल्मो सितम की आंधी चला कर, डरा, धम्का कर अस्लहा दिखा कर, हराम माल हासिल करने वालों को **अल्लाह** पाक से डरना चाहिये क्यूं कि चोरों, डाकूओं के बारे में कुरआनो अहादीस में बड़ी वईदें बयान हुई हैं, नीज़ दुनिया व आखिरत में इन के लिये बड़ी सख़्त सजाएं हैं।

पारह 6 सूरतुल माइदह की आयत नम्बर 33 में इर्शाद होता है :

إِنَّمَا جَزَاءُ الَّذِينَ يُحَارِبُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا أَنْ يُقَتَّلُوا أَوْ يُصَلَّبُوا أَوْ تُقَطَّعَ أَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ مِنْ خِلَافٍ أَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْأَرْضِ ۗ ذَٰلِكَ لَهُمْ جُزْءٌ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْأٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٥٦﴾

तरजमा : बेशक जो लोग अल्लाह और उस के रसूल से लड़ते हैं और ज़मीन में फ़साद बरपा करने की कोशिश करते हैं उन की सज़ा येही है कि उन्हें ख़ूब क़त्ल किया जाए या उन्हें सूली दे दी जाए या उन के एक तरफ़ के हाथ और दूसरी तरफ़ के पाउं काट दिये जाएं या (मुल्क की सर) ज़मीन से (जला वतन कर के) दूर कर दिये जाएं। यह उन के लिये दुन्या में रुस्वाई है और आख़िरत में उन के लिये बड़ा अज़ाब है।

इस आयते करीमा में डाकू की सज़ा का बयान है।

चोरी किसे कहते हैं ?

चोरी यह है कि दूसरे का माल छुपा कर नाहक़ ले लिया जाए।

(बहारे शरीअत, 2/413, हिस्सा : 9)

इस्लामी सज़ाओं की हिकमत

इस्लाम ने हर जुर्म की सज़ा उस की नौइय्यत के ए'तिबार से मुख़्तलिफ़ रखी है, छोटे जुर्म की सज़ा हलकी और बड़े की उस की हैसियत के मुताबिक़ सख़्त सज़ा नाफ़िज़ की है ताकि ज़मीन में अमन काइम हो और लोग बे ख़ौफ़ हो कर सुकून और चैन की ज़िन्दगी बसर कर सकें। इस के इलावा और भी बे शुमार हिकमतें हैं। डाका ज़नी की सज़ा ही को ले लीजिये कि जब तक इस पर अमल रहा तो तिजारती काफ़िले अपने कीमती साजो सामान के साथ बे ख़ौफ़ो ख़तर सफ़र करते थे जिस

की वजह से तिजारत को बेहद फ़रोग़ मिला और लोग मआशी ए'तिबार से बहुत मज़बूत हो गए। अब तो हालात इतने नाजुक हो चुके हैं कि बैंक से कोई पैसे ले कर निकला तो रास्ते में लुट जाता है, कोई पैदल जा रहा है तो उस की नक़दी और मोबाइल छिन जाता है, कोई बस का मुसाफ़िर है तो वहां भी महफूज़ नहीं, कोई अपनी सुवारी पर है तो वोह खुद को ज़ियादा ख़तरे में महसूस करता है। (तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पारह : 6, तहत्तल आयह : 33, 2/423)

ऐ खासए खासाने रुसुल वक्ते दुआ है

उम्मत पे तेरी आ के अज़ब वक़्त पड़ा है

ज़ुल्मन लोगों का माल लेने के मुतअल्लिक़

7 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

﴿1﴾ हज़रते अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : चोर पर अल्लाह पाक ने ला'नत फ़रमाई है। (6783: حدیث: 330/4, بخاری, 184/4)

﴿2﴾ जो सरे आम लूट मचाए वोह हम से नहीं। (4391: حدیث: 184/4, बुदाउद, 184/4)

हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : या'नी जो ज़ालिम खुले बन्दों लोगों का माल छिन ले और लोग मुंह तक्ते रह जाएं, ऐसा ज़ालिम हमारे तरीक़े, हमारी जमाअत से ख़ारिज है, इस्लाम से निकल जाना मुराद नहीं कि येह जुर्म फ़सादे अमल है, फ़सादे अक़ीदा नहीं। ख़याल रहे ! डकैती की सज़ाएं मुख़्तलिफ़ हैं, बा'ज़ सूरतों में उस को सूली दी जाएगी। (मिरआतुल मनाजीह, 5/305 मुलख़ख़सन)

﴿3﴾ चोर चोरी करते वक़्त और डाकू डकैती करने की हालत में मोमिन नहीं होता कि लोग अपने माल को तरस्ती निगाह उठा कर देखते रह जाएं लिहाज़ा इन से बचो, इन से बचो। (579/3, بخारी, 579/3, حدیث: 5578: ملقطاً - مسلم, 52, حدیث: 207)

शारेहे बुखारी, हज़रते अल्लामा मुफ़्ती शरीफ़ुल हक़ अमजदी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : इस से येह भी मुराद हो सकती है कि कामिलुल ईमान होते हुए कोई येह गुनाह नहीं कर सकता या येह कि मोमिन की येह शान नहीं कि येह गुनाह करे । (नुज़हतुल कारी, 5/749 तस्हीलन)

हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : या'नी इन गुनाहों के वक़्त मुजरिम से नूरे ईमान निकल जाता है वरना येह गुनाह कुफ़्र नहीं । डाकू ज़ाहिर जुहूर (खुले आम) माल लूट ले और मालिक दफ़अ पर कादिर न हों या अपने माल को हसरत भरी निगाहों से देखते रह जाएं कि हाए ! हमारा माल चल दिया । डकैती में तीन जुर्म हुए : ग़ैर के माल पर ना जाइज़ कब्ज़ा, ज़ाहिर जुहूर दूसरे का माल छीन लेना, दिल की सख़्ती कि लोगों की हसरत और आहो बुका पर तर्स न खाए । लिहाज़ा येह गुनाहों का मज्मूआ हुई, (इस लिये येह) मोमिन की शान के ख़िलाफ़ है । (मिरआतुल मनाजीह, 1/73)

हज़रते अल्लामा अब्दुल मुस्तफ़ा आ'जमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : मतलब येह है कि चोरी करते वक़्त इस गुनाह की नुहूसत से उस का नूरे ईमान उस से अलग हो जाता है और फिर जब वोह उस गुनाह से तौबा कर लेता है तो उस का नूरे ईमान फिर उस को मिल जाता है । वाजेह रहे कि डाका डालना, लूटमार करना, किसी की ज़मीन या माल व जायदाद को ग़स्ब कर लेना, किसी से आरियत (या'नी उधार) के तौर पर कोई सामान ले कर वापस न करना, किसी से कर्ज़ ले कर उस को अदा न करना, किसी की अमानत में ख़ियानत करना वग़ैरा येह सब चोरी की तरह गुनाहे कबीरा हैं और येह सब क़हरे क़हार व ग़ज़बे जब्बार में गिरिफ़्तार होने का सबब और अज़ाबे नार का बाइस हैं । (जहन्नम के ख़तरात, स. 39, 40 मुल्लक़तन)

चोरी की राह में छुपे हैं अंधेरे हज़ार ईमान का नूर चमक्ता है रास्ते के पार

﴿4﴾ तमाम मुसलमानों की प्यारी अम्मीजान हज़रते बीबी आइशा رَضِيَ اللهُ عَنْهَا फ़रमाती हैं : कबीलए कुरैश की एक औरत ने चोरी की तो उस के खानदान वालों ने हज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِيَ اللهُ عَنْهُ को नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह में सिफ़ारिश करने के लिये कहा : हज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने सिफ़ारिश की तो नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम अल्लाह पाक की हृदों में से एक हृद के बारे में सिफ़ारिश करते हो ? फिर खड़े हुए और खुत्बा इर्शाद फ़रमाया, फिर फ़रमाया : तुम से पहले लोगों को इस बात ने हलाक किया कि जब उन में से कोई मुअज़्ज़ज़ शख्स चोरी करता तो उसे छोड़ देते और जब कोई कमज़ोर चोरी करता तो उस पर हृद काइम कर देते । अल्लाह की क़सम ! अगर फ़ातिमा बिनते मुहम्मद भी चोरी कर लेती तो मैं उस का भी हाथ काट देता । (بخاری، 2/468، حدیث: 3475)

शर्हें हदीस : मुजरिम पर रहूम येह ही है कि उसे पूरी सज़ा दे दी जाए, किसी की किसी तरह रिआयत न की जाए कि इस से मुल्क में अमान काइम रहता है, और येह सज़ाएं हक्कुल्लाह हैं किसी के मुआफ़ करने से मुआफ़ नहीं होतीं । “सय्यिदह” का नाम ले कर येह बताना मन्ज़ूर है कि शर्ई सज़ा में किसी बड़े से बड़े दरजे वाले की भी रिआयत नहीं, रब तआला फ़रमाता है : ﴿وَلَا تَأْخُذْكُمْ بِهِمَا آفَةٌ فِي دِينِ اللَّهِ﴾ तरजमा : और तुम्हें अल्लाह के दीन में उन पर कोई तर्स न आए । (میرآतुल मनाजीह، 5/309)

﴿5﴾ मैं ने जहन्नम में एक शख्स को देखा जो अपनी टेढ़ी लाठी के ज़रीए हाजियों की चीज़ें चुराता, जब लोग उसे चोरी करता देख लेते तो कहता : “मैं चोर नहीं हूँ, येह सामान मेरी टेढ़ी लाठी में अटक गया था ।” वोह आग में अपनी टेढ़ी लाठी पर टेक लगाए येह कह रहा था : “मैं टेढ़ी लाठी वाला चोर हूँ ।”

(جمع الجوامع، 3/27، حدیث: 7076)

शर्हे हदीस : मिहूजन (या'नी लाठी)⁽¹⁾ वाले का नाम अम्र इब्ने लुहय है, जब वोह चलता फिरता है तो आंतें घिसटती हैं। रब की पनाह ! गरजे कि Fashionable सियासी चोर था कि हुज्जाज के कपड़े दिन दिहाड़े इस तरह चोरी करता था कि पकड़ा भी न जाए और चोरी भी करे, मालिक ने देख लिया तो कह दिया : अरे मुझे ख़बर न हुई कि मेरे मिहूजन (या'नी लाठी) से तेरा कपड़ा लग गया है, न देखा तो माल अपना कर लिया।

(मिरआतुल मनाजीह, 4/316 मुलख़ख़सन)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

تُؤْبُوا إِلَى اللَّهِ! ❀❀❀ أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿6﴾ जुल्म क़ियामत के दिन अंधेरियों की सूत में होगा।

(مسلم، ص 1069، حديث: 6577)

शारेहे बुख़ारी, हज़रते अल्लामा मुफ़ती शरीफ़ुल हक़ अमजदी फ़रमाते हैं : ज़ालिम जुल्म करने की वजह से इकठ्ठे कई गुनाहों का इरतिकाब करता है, अल्लाह पाक और रसूल صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ना फ़रमानी, एक कमज़ोर मुसलमान को ईज़ा (या'नी तकलीफ़) पहुंचाना, गाली गलोच दे कर, ज़दो कोब कर के या माल छीन कर या इन सब का इरतिकाब एक साथ करना जैसा कि अक्सर देखने में आया। इस लिये इस की सज़ा में क़ियामत के दिन ज़ालिम का जुल्म तारीकियां ही तारीकियां बन कर उसे घेर लेगा।

(नुज्हतुल का़री, 3/668 मुलतक़तन)

①... हदीसे पाक में लफ़्ज़ "मिहूजन" आया है, इस का मा'ना है : ऐसी लाठी जिस के कनारे पर लोहा लगा हुआ हो और वोह "हौकी" की तरह मुड़ी हुई हो। (اشعة المعات، 3/57)

﴿7﴾ हराम से पलने वाला जिस्म जन्नत में दाखिल नहीं होगा ।

(مسند ابی یعلیٰ، 57/1، حدیث: 79)

हाफ़िज़ शम्सुद्दीन मुहम्मद बिन अहमद ज़हबी शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : इस हदीसे पाक की वर्इद के तहत डाकू, चोर, मस्ख़रा (Comedian), ख़ाइन, जा'लसाज़ (या'नी धोका करने वाला) और उधार चीज़ ले कर इन्कार कर देने वाला, नापतोल में कमी करने वाला, ऐब ज़दा चीज़ को ऐब छुपा कर बेचने वाला, जूआ खेलने वाला येह सब के सब दाख़िल हैं ।

(76 कबीरा गुनाह, स. 90)

“मिरआतुल मनाजीह” में है : जैसे मिट्टी के तेल में भीगा हुवा कपड़ा आग में जल्द जल जाता है ऐसे ही सूद, रिश्वत, जूए, चोरी वग़ैरा हराम माल से पैदा शुदा गोश्त दोज़ख़ की आग में बहुत जल्द जलेगा, चूँकि ग़िज़ा से खून और खून से गोश्त बनता है इस लिये ग़िज़ा बहुत पाकीज़ा होनी चाहिये, हराम ग़िज़ा का असर सारे बदन पर पड़ता है ।

(मिरआतुल मनाजीह, 4/258)

पूरे काफ़िले को अकेले लूटने वाला डाकू

बहुत बड़े वलिय्युल्लाह हज़रते फुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ तौबा से क़ब्ल इतने बड़े और ख़तरनाक डाकू थे कि पूरे के पूरे काफ़िले को अकेले ही लूट लेते । एक मरतबा एक काफ़िला आप के अलाके के करीब से गुज़रा, उन्हें वहीं रात हो गई । आप डाका डालने की निय्यत से जब काफ़िले के करीब पहुंचे तो बा'ज़ काफ़िले वालों को येह कहते हुए सुना : “तुम इस बस्ती की तरफ़ न जाओ बल्कि कोई और रास्ता इख़्तियार कर लो, यहां फुज़ैल नामी एक ख़तरनाक डाकू रहता है ।”

आप ने जब काफ़िले वालों की येह बात सुनी तो कपकपी तारी हो गई और बुलन्द आवाज़ से कहा : ऐ लोगो ! मैं फुज़ैल बिन इयाज़ तुम्हारे सामने मौजूद हूं, जाओ ! बे ख़ौफ़ो ख़तर गुज़र जाओ, तुम मुझ से महफूज़ हो । खुदा की क़सम ! आज के बा'द मैं कभी भी अल्लाह पाक की ना फ़रमानी नहीं करूंगा । इतना कह कर आप वहां से चले गए और अपने पिछले तमाम गुनाहों से तौबा कर के राहे हक़ के मुसाफ़िरो में शामिल हो गए । एक क़ौल येह है कि आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ने उस रात काफ़िले वालों की दा'वत की और फ़रमाया : तुम फुज़ैल बिन इयाज़ से अपने आप को महफूज़ समझो, फिर आप उन के जानवरों के लिये चारा वगैरा लेने चले गए, जब वापस आए तो किसी को पारह 27 सूरतुल ह़दीद की आयत नम्बर 16 की तिलावत करते हुए सुना : ﴿ اَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِينَ آمَنُوا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ ﴾

तरजमा : क्या ईमान वालों के लिये अभी वोह वक़्त नहीं आया कि उन के दिल अल्लाह की याद के लिये झुक जाएं ।

कुरआने करीम की येह आयत तासीर का तीर बन कर आप के सीने में उतर गई । आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ने रोना शुरू कर दिया और अपने कपड़ों पर मिट्टी डालते हुए कहा : हां ! क्यूं नहीं ! अल्लाह पाक की क़सम ! अब वक़्त आ गया, अब वक़्त आ गया, आप इसी तरह रोते रहे और फिर अपने तमाम गुनाहों से तौबा कर ली । (عيون الكوايات، ص 212)

अल्लाह पाक की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمِيْن بِجَاهِ خَاتِمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ।

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَيَّ مُحَمَّد

भाई भाई बन जाओ !

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! घिनाउने और हराम काम चोरी डकैती करने पर चोर, डाकूओं को अपने मुसलमान भाई को घूरने, डराने, धमकाने, खौफ़जदा करने, हाथ उठाने, अस्लहा तानने, माल छीनने और ख़वातीन से ज़ेवरात वगैरा के हुसूल के लिये ज़ख़मी करने जैसे कई गुनाह मज़ीद करने पड़ते हैं हालां कि हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : “क्या तुम जानते हो कि मुसलमान कौन है ?” सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज़ की : **अल्लाह** पाक और उस के रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ज़ियादा जानते हैं । इर्शाद फ़रमाया : मुसलमान वोह है जिस की ज़बान और हाथ से (दूसरे) मुसलमान महफूज़ रहें । इर्शाद फ़रमाया : तुम जानते हो कि मोमिन कौन है ? सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज़ की : **अल्लाह** पाक और उस के रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ज़ियादा जानते हैं । इर्शाद फ़रमाया : मोमिन वोह है जिस से ईमान वाले अपनी जानों और मालों को महफूज़ समझें । (6942: حدیث: 654/2, مسند امام احمد) एक और हृदीसे पाक में फ़रमाया गया : ऐ **अल्लाह** के बन्दो ! भाई भाई बन जाओ, मुसलमान मुसलमान का भाई है, उस पर न जुल्म करे, न उस को रुस्वा करे । (6541: حدیث: 1064, مسلم)

हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : मुसलमान को न डराओ ! क्यूं कि मुसलमान को डराना बहुत बड़ा जुल्म है । (4301: حدیث: 386/3, الترغیب والترہیب) जिस ने किसी मुसलमान की तरफ़ डराने वाली नज़र से नाहक़ देखा तो **अल्लाह** पाक बरोज़े क़ियामत इस के बदले उसे खौफ़जदा करेगा । (7536: حدیث: 116/8, معجم کبیر)

बद नसीब लोग

हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ फ़रमाते हैं : “مَنْ اَذَى مُسْلِمًا” **فَقَدْ اِذَانِي وَمَنْ اِذَانِي فَقَدْ اَذَى اللّٰه** जिस ने मुसलमान को तक्लीफ़ दी उस ने मुझे

तक्लीफ़ दी और जिस ने मुझे तक्लीफ़ दी उस ने अल्लाह पाक को तक्लीफ़ दी ।
(3607) जिस ने अल्लाह पाक को तक्लीफ़ दी, बिल आख़िर
अल्लाह पाक उसे अज़ाब में गिरिफ़्तार फ़रमाएगा । (3888) (ترمذی، 463/5، حدیث: 3888)

हज़रते अल्लामा इस्माइल हक्की رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ فَرَمَاتे हैं : ईमान
वालों को तक्लीफ़ देना गोया कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को अज़ियत
देना है और रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को तक्लीफ़ देना गोया कि अल्लाह
पाक को अज़ियत देना है, तो जिस तरह अल्लाह पाक और उस के हबीब
صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को अज़ियत देने वाला दुनिया और आख़िरत में ला'नत का
मुस्तहक़ है, इसी तरह ईमान वालों को तक्लीफ़ देने वाला भी दोनों जहां
में ला'नत व रुस्वाई का हक़दार है । (تفسير روح البیان، پ 22، تحت الآية: 239/7، 58)

अज़ीम ताबेई बुजुर्ग हज़रते मुजाहिद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ فَرَمَاتे हैं :
जहन्नमियों पर ख़ारिश मुसल्लत कर दी जाएगी तो वोह अपने जिस्म को
खुजलाएंगे हत्ता कि उन में से एक के चमड़े से हड्डी ज़ाहिर हो जाएगी तो उसे
पुकारा जाएगा : ऐ फुलां ! क्या तुम्हें इस से तक्लीफ़ होती है ? वोह कहेगा :
हां । पुकारने वाला कहेगा : तू मुसल्मानों को तक्लीफ़ पहुंचाया करता था
येह उस की सज़ा है । (احیاء العلوم، 2/242)

हमेशा हाथ भलाई के वासिते उड़ें बचाना जुल्मो सितम से मुझे सदा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 76)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाहु ग़नी की शाने बे नियाज़ी
के कुरबान ! जब वोह नवाज़ने पर आता है तो कैसे नवाज़ता है, मल्फूज़ाते
आ'ला हज़रत में है :

डाकू वली बन गया

(इमामे अहले सुन्नत, आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ने फ़रमाया :) **अल्लाह** पाक को हिदायत फ़रमाते देर नहीं लगती। हज़रते अबू बक्र बिन हवार رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ पहले रहज़न (या'नी डाकू) थे, काफ़िले के काफ़िले तन्हा लूटा करते थे। एक बार एक काफ़िला ठहरा, आप वहां तशरीफ़ ले गए, एक ख़ैमे की तरफ़ गए, उस ख़ैमे में औरत अपने शौहर से कह रही थी : शाम क़रीब है और इस जंगल में “अबू बक्र बिन हवार” का दख़ल है, ऐसा न हो कि वोह आ जाएं ! बस येह कहना उन का हादी (या'नी हिदायत का सबब) हो गया, खुद से फ़रमाया : अबू बक्र ! तेरी हालत येह हो गई कि ख़ैमों में औरतें तक तुझ से ख़ौफ़ करती हैं और तू खुदा से नहीं डरता ! उसी वक़्त तौबा की और घर को लौट आए, रात सोए तो ख़्वाब में ज़ियारते अक्दस (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) से मुशरफ़ हुए, हुजूरे अक्दस (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) के साथ अबू बक्र सिदीक (رَضِيَ اللهُ عَنْهُ) भी थे, आप ने अर्ज़ किया : बैअत लीजिये ! इर्शाद फ़रमाया : तुझ से तेरा हमनाम बैअत लेगा, हज़रते अबू बक्र सिदीक (رَضِيَ اللهُ عَنْهُ) ने बैअत ली और अपनी कुलाह (या'नी इमामा) मुबारक उन के सर पर रखी, आंख खुली तो कुलाहे अक्दस मौजूद थी। सिल्लिसलए हवारिया आप से शुरूअ हुवा। (जामेअ करामाते औलिया, 1/425, मल्फूज़ाते आ'ला हज़रत, स. 445 बित्तस्हील) **अल्लाह पाक की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत हो।** اٰمِيْنَ بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

जहन्नम का खौलता हुवा पानी

सुल्तानुल वाइज़ीन मौलाना अबुन्नूर बशीर कोटलवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ

लिखते हैं : जिन लोगों ने सूद, रिश्वत, ग़बन और दीगर ना जाइज़ तरीकों से जो माल कमाया और खाया है, कल क़ियामत के दिन जब शहन्शाहे हकीकी उन्हें जहन्नम का ख़ौलता हुवा पानी पिलाएगा तो यह सारा हराम का माल वहां उगलना पड़ेगा और चोर पकड़े जाएंगे, पस आज तौबा के साथ मे'दा साफ़ कर लेना चाहिये । (सच्ची हिकायात, 3/316 ब तग़य्युर)

चोर, डाकू से बड़ा ज़ालिम

“तफ़्सीरे कुरतुबी” में है : जो चोर और डाकू मुसाफ़िरों और शहरियों से लूटमार कर के उन पर जुल्म करते हैं येह सब ज़ालिम की सफ़ में शामिल हैं, इन तमाम पर अल्लाह पाक कोई उन से बड़ा ज़ालिम मुसल्लत कर देता है । (तफ़्सीर قرطبي، 8، تحت الآية: 62/4، طحطا)

क़त्ले नाहक़ का गुनाह

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बा'ज़ दरिन्दा सिफ़त चोर, डाकू अपने लिये जहन्नम की आग मज़ीद बढ़ाने के लिये क़त्लो ग़ारत गरी से भी बाज़ नहीं आते और यूं मालो दौलत के साथ साथ बसा अवक़ात किसी घर के वाहिद कफ़ील (या'नी कफ़ालत करने वाले) को शहीद कर के किसी ख़ातून को बेवा और बच्चों को यतीम कर देते हैं ।

बसा अवक़ात चोर डाकू पकड़े जाने के ख़ौफ़ से या सामने से होने वाली मुज़ाहमत के नतीजे में फ़ायर कर के सामने वाले को ज़ख़मी या शहीद कर के भाग जाते हैं, वोह समझते हैं कि हम गोया पकड़े जाने से बच गए लेकिन याद रखें ! अगर वोह दुन्या में पोलीस या क़ानून से बच भी गए तो इस हराम काम से तौबा और तौबा के तकाज़े पूरे न करने के सबब क़ियामत के दिन ऐसी जगह कैद होंगे जहां से उन्हें कोई छुड़ा नहीं सकेगा । दुन्या में

बसा अवकात रिश्वत या असरो रुसूख़ के सबब जेल से भी बाहर आ जाते हैं लेकिन क़ियामत के दिन के अज़ाब से बच नहीं पाएंगे। किसी मुसल्मान को नाहक़ क़त्ल करना बहुत बड़ा गुनाह है। कुरआनो हदीस में इस गुनाह का बहुत सख़्त अज़ाब बयान किया गया है, चुनान्चे पारह 5, सूरतुन्निसाअ, आयत नम्बर 93 में इर्शाद होता है :

وَمَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُتَعَمِدًا فَوَجْرًا أَوْ وَجْهًا خَالِدًا فِيهَا وَغَضَبَ اللَّهِ عَلَيْهِ وَلَعْنَهُ
وَأَعَدَّ لَهُ عَذَابًا عَظِيمًا ﴿٩٣﴾

तरजमा : और जो किसी मुसल्मान को जान बूझ कर क़त्ल कर दे तो उस का बदला जहन्म है अर्सेए दराज़ तक उस में रहेगा और अल्लाह ने उस पर ग़ज़ब किया और उस पर ला'नत की और उस के लिये बड़ा अज़ाब तय्यार कर रखा है।

क़त्ले नाहक़ का अज़ाब

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! क़त्ले मुस्लिम मा'मूली बात नहीं है, आज कल छोटी छोटी बातों पर जान से मार देना, गुन्डा गर्दी, दहशत गर्दी, डकैती, ख़ानदानी लड़ाई, तअस्सुब वाली लड़ाइयां आम हैं। मुसल्मानों का ख़ून पानी की तरह बहाया जाता है। मरने के बा'द क़त्ल करने का अज़ाब सहा नहीं जा सकेगा, नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : “अगर ज़मीनो आस्मान वाले किसी मुसल्मान के क़त्ल पर जम्अ हो जाएं तो अल्लाह पाक सब को औंधे मुंह जहन्म में डाल देगा।” (मूज्मिग़, 2/205) एक और हदीसे पाक में है : एक मोमिन का क़त्ल किया जाना अल्लाह पाक के नज़्दीक दुन्या के तबाह हो जाने से ज़ियादा बड़ा है। (नस़ी, 652, 3992) حديث:

कर ले तौबा रब की रहमत है बड़ी क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

महशर में ज़िल्लतो रुस्वाई

इमाम शरफुद्दीन हुसैन बिन मुहम्मद तीबी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं :
 “जिस ने दुनिया में ज़कात या किसी और माल से चोरी की तो क़ियामत के दिन वोह इस तरह आएगा कि चोरी के माल को उठाए हुए होगा, अगर वोह माल कोई जानवर हुवा तो वोह जानवर बुलन्द आवाज़ से चीख़ता होगा और उसे तमाम महशर वाले पहचान लेंगे (कि येह चोर है) ताकि उस की ख़ूब ज़िल्लतो रुस्वाई हो।”
 (شرح طیبی، 4/17، تحت الحدیث: 1779)

शहादत का दरजा

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर किसी शख़्स का माल चोरी हो जाए और वोह उस पर सब्र करे तो उस को सदक़े का सवाब मिलेगा और जो शख़्स अपना माल बचाने, अपनी जान या अपने घर वालों की जान बचाने में मारा जाए वोह शहीद है जैसा कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ फ़रमाते हैं : जो अपना माल बचाने में मारा जाए वोह शहीद, जो अपनी जान बचाने में मारा जाए वोह शहीद, जो अपना दीन बचाने में मारा जाए तो वोह शहीद और जो अपने घर वालों को बचाने में मारा जाए वोह शहीद है।

(ترمذی، 3/112، حدیث: 1426 - نسائی، ص 667، حدیث: 4101)

ख़ूब सूरत सोच

हज़रते अहमद बिन हर्ब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ के पड़ोस में एक शख़्स के हां चोरी हो गई। आप अपने दोस्तों के साथ उस की ग़म ख़्वारी को तशरीफ़ ले गए। पड़ोसी ने बड़ी ख़न्दा पेशानी से उन का इस्तिक्बाल किया। हज़रते अहमद बिन हर्ब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ने फ़रमाया : हम तुम्हारी चोरी होने का अफ़सोस करने आए हैं। पड़ोसी बोला : मैं तो **अल्लाह** पाक का शुक्र अदा कर रहा

हूं और मुझ पर उस के तीन शुक्र वाजिब हो गए हैं। एक येह कि दूसरों ने मेरा माल चुराया है, मैं ने नहीं। दूसरा येह कि अभी आधा माल मेरे पास मौजूद है, तीसरा येह कि मेरी दुनिया को नुकसान पहुंचा है और दीन मेरे पास है। (सच्ची हिकायात, 4/142) **अल्लाह पाक की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत हो।** اٰمِيْنَ بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

आह! दौलत की हिफ़ाज़त में तो सब हैं कोशां हिफ़ज़े ईमां का तसक्वर ही मिटा जाता है

سُبْحٰنَ اللهِ! अल्लाह वालों की भी कितनी प्यारी सोच होती है कि माल गया ईमान तो नहीं गया, “कुछ माल” गया है सब तो नहीं गया। अल्लाह पाक के नेक बन्दे ज़बान पर शिक्वा शिकायत नहीं लाते, हर हाल में अल्लाह पाक की रिज़ा पर सब्र करते और अज़्र पाते हैं। ईमान अनमोल दौलत है, येह सलामत है तो कुछ ग़म नहीं होना चाहिये, हमें भी चाहिये कि अपने ईमान की हिफ़ाज़त की फ़ि़क़र करते रहा करें।

या खुदा जिस्म में जब तक के मेरी जान रहे तुझ पे सदके तेरे महबूब पे कुरबान रहे कुछ रहे या न रहे पर येह दुआ है कि अमीर नज़्द के वक़्त सलामत मेरा ईमान रहे

चोर को दुआ

एक मरतबा हज़रते रबीअ बिन खुसैम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ का घोड़ा चोरी हो गया। साथ वालों ने अर्ज़ की : “हुज़ूर! चोर के लिये बददुआ कीजिये।” आप ने फ़रमाया : “नहीं बल्कि मैं तो उस के लिये दुआ ही करूंगा।” फिर यूं दुआ फ़रमाई : “ऐ अल्लाह पाक! अगर चोर मालदार है तो उस के दिल को क़नाअत की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और अगर फ़कीर है तो उसे ग़नी कर दे।”

(طلبة الاولياء، 2/130، رقم: 1696)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर खुदा न ख़्वास्ता चोरी या डकैती की वारिदात हो जाए तो हर एक को बताने के बजाए अपनी मुसीबत छुपा कर, सब्र कर के अज़्र कमाएं। लोगों को बताने से किसी ने खोई हुई चीज़ वापस ला कर तो देनी नहीं, नतीजतन शिक्वा व शिकायत हो जाने की सूरत में मिलने वाले अज़्र से महरूमी हो सकती है।

जुल्म पर सब्र की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : अल्लाह पाक जब मज़्लूम को जम्अ फ़रमाएगा तो एक ए'लान करने वाला ए'लान करेगा : फ़ज़ल वाले कहां हैं ? तो कुछ लोग खड़े होंगे और उन की ता'दाद बहुत कम होगी। जब येह जल्दी से जन्नत की तरफ़ बढ़ेंगे तो फ़िरिश्ते उन से मुलाक़ात करेंगे और कहेंगे : हम देख रहे हैं कि तुम तेज़ी से जन्नत की तरफ़ जा रहे हो, तुम कौन हो ? वोह जवाब देंगे : हम फ़ज़ल वाले हैं। फ़िरिश्ते कहेंगे : तुम्हारा फ़ज़ल क्या है ? वोह जवाब देंगे : जब हम पर जुल्म किया जाता था तो हम सब्र करते थे और जब हम से बुराई का बरताव किया जाता था तो उसे बरदाश्त करते थे। फिर उन से कहा जाएगा कि जन्नत में दाख़िल हो जाओ कि अच्छे अमल वालों का सवाब कितना अच्छा है। (18: حدیث: 281/3, الترغیب والترہیب) **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : मज़्लूम जब जुल्म पर सब्र करता है तो **अल्लाह** पाक उस की इज़्ज़त बढ़ा देता है। (ترمذی، 4/145، حدیث: 2332)

है सब्र तो ख़ज़ानाए फ़िरदौस भाइयो ! आशिक़ के लब पे शिक्वा कभी भी न आ सके

डाकू की तौबा

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ! आशिक़ाने रसूल की दीनी तहरीक दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल की बरकत से बड़े बड़े चोर

डाकूओं के राहे रास्त पर आने के वाकिआत हैं। दा'वते इस्लामी की एक मजलिस राबिता बिल उलमा भी है, इस मजलिस के इस्लामी भाई मशहूर दीनी दर्सगाह जामिआ राशिदिया तशरीफ ले गए। बात निकली तो वहां के शैखुल हदीस साहिब कुछ इस तरह फ़रमाने लगे : दीनी काम की कारकदर्गी मैं खुद आप को सुनाता हूं, किसी अलाके में एक डाकू ने तबाही मचा रखी थी, मैं उसे जानता था, आए दिन पोलीस के साथ उस की आंख मचोली जारी रहती, कई बार गिरिफ़्तार भी हुवा, मगर तअल्लुकात इस्ति'माल कर के छूट गया, आखिर किसी जुर्म में पोलीस के हथ्थे चढ़ गया, सज़ा हुई और जेल में चला गया, सज़ा काट लेने के बा'द रिहाई मिलने पर मुझ से मिलने आया, मैं पहली नज़र में उसे पहचान न सका क्यूं कि उस के चेहरे पर मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की महबूबत की निशानी, नूरानी दाढ़ी जगमगा रही थी, सर पर इमामे शरीफ़ का ताज, पेशानी पर नमाज़ों का नूर नज़र आ रहा था, वोह बोला : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ! मुझे दा'वते इस्लामी का दीनी माहोल मिल गया।

अगर चोर डाकू भी आ जाएंगे तो सुधर जाएंगे गर मिला दीनी माहोल
गुनहगारो आओ, सियहकारो आओ गुनाहों को देगा छुड़ा दीनी माहोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 648)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

हलाल कमाइये

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : रूहुल कुदुस (या'नी हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام) ने मेरे दिल में डाला कि कोई जान न मरेगी हत्ता कि अपना रिज़क पूरा करे, ख़याल रखो कि अल्लाह से डरो, तलाशे रिज़क में

दरमियानी राह इख़्तियार करो और रिज़्क में देर लगाना तुम को इस पर न उक्साए कि तुम अल्लाह पाक की ना फ़रमानी से रिज़्क ढूंडो क्यूं कि अल्लाह के पास की चीज़ें उस की फ़रमां बरदारी से ही हासिल की जा सकती हैं ।

(شرح السنه، 7/330، حدیث: 4008 موطأ)

शर्हें हदीस : या'नी हलाल ज़रीए से रोज़ी कमाओ, हराम ज़रीओं से बचो, हराम ज़रीओं से कमाना इफ़रात (या'नी हद से बढ़ना) है और बिल्कुल कमाई न करना बेकार बैठ रहना तफ़रीत (या'नी हद से ज़ियादा कमी करना), दरमियानी राह येह है (कि) अगर कभी रोज़ी कम मिले या कुछ रोज़ के लिये न मिले तो चोरी, जूआ, रिश्वत, ख़ियानत, ग़स्ब वग़ैरा से रोज़ी हासिल करने की कोशिश न करो, हलाल काम किये जाओ, उस की मेहरबानी से उम्मीद रखो या'नी सब की रोज़ी अल्लाह के ही पास है, अगर तुम ने उसे हराम ज़रीए से हासिल किया तो वोह हराम हो कर तुम तक पहुंची, रब भी नाराज़ हुवा मगर मिला वोही जो तुम्हारा हिस्सा था, और अगर हलाल ज़रीए से हासिल किया तो वोह हलाल हो कर तुम्हारे पास पहुंचा, अल्लाह पाक भी राज़ी हो गया, मिला तुम्हारा हिस्सा ही ।

(मिरआतुल मनाज़ीह, 7/114)

बड़ी बड़ी मूंछों वाला बद मआश

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हुसूले इल्मे दीन के लिये दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाआत भी अहम ज़रीआ हैं, आप भी अपने शहर में होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाआत में शिर्कत कीजिये, इन इज्तिमाआत की बरकत से कैसे कैसे बिगड़े हुए लोगों की ज़िन्दगी में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो गया, इस की एक झलक इस मदनी बहार में पढ़िये :

एक आलम साहिब जो कि दा'वते इस्लामी के मुबल्लिग़ हैं, उन्होंने ने बताया कि 1995 सि.ई. में एक शख्स जिस पर कमो बेश 11 डकैतियों के केस थे, जिन में एक क़त्ल का मुक़द्दमा भी शामिल है। एक साल जेल की सलाखों के पीछे भी रहा था, महकमए नहर में मुलाज़मत भी थी, तनख़्वाह 3000 थी मगर वोह ना जाइज़ ज़राएअ़ से मसलन दरख़्त फ़रोख़्त कर के, चोरी का पानी वगैरा दे कर माहाना 10000 तक कर लेता, उस ने बड़ी बड़ी मूँछें रखी थी, देखने वाले को उस से वहशत होती, एक रोज़ मैं ने इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए उसे दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की दा'वत पेश की मगर उस ने मेरी दा'वत टाल दी, मैं ने हिम्मत नहीं हारी वक़्तन फ़ वक़्तन दा'वत पेश करता रहा, आख़िरे कार कमो बेश दो साल बा'द उस ने दा'वत क़बूल कर ली और वोह इज्तिमाअ़ में शरीक हो गया, इत्तिफ़ाक़ से उस दिन मेरा ही बयान था जो कि जहन्नम के अज़ाब के मुतअल्लिक़ था, जहन्नम की तबाहकारियां सुन कर सख़्त सर्दियों का मौसिम होने के बा वुजूद बद मअ़ाश पसीने से शराबोर हो गया, बा'दे इज्तिमाअ़ वोह रोता जाता और कहता जाता : हाए ! मेरा क्या बनेगा ? मैं ने बहुत सारे गुनाह किये हैं, फिर वोह तीन दिन बुख़ार के आलम में रहा, उसे अपने गुनाहों का शिद्दत से एहसास हो चुका था, उस ने तौबा कर ली और नमाज़ें भी पढ़ने लगा, दूसरी जुमे'रात उसे फिर इज्तिमाअ़ में शिक़त की सआदत मिली और जन्नत के मौजूअ़ पर बयान सुन कर उस को ढारस मिली, आहिस्ता आहिस्ता उस पर मदनी रंग चढ़ता चला गया, यहां तक कि वोह दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल से वाबस्ता हो गया, दाढ़ी और

इमामा सजाने की सआदत भी हासिल कर ली। येह बयान देते वक्त वोह दा'वते इस्लामी के दीनी कामों में मशगूल तन्जीमी तौर पर सूबाई सत्ह पर मजलिसे खुद्दामुल मसाजिद की जिम्मेदारी पर फ़ाइज है।

अगर चोर डाकू भी आ जाएंगे तो सुधर जाएंगे गर मिला दीनी माहोल
गुनाहगारो आओ, सियहकारो आओ गुनाहों को देगा छुड़ा दीनी माहोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 648)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❁❁❁ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

जानो माल की हिफ़ाज़त के लिये चन्द रूहानी इलाज पेश किये जाते हैं, إِنَّ شَاءَ اللَّهُ इन की बरकत से जानो माल और घर वगैरा की हिफ़ाज़त होगी।

चोर, डाकू से हिफ़ाज़त के 6 वज़ीफ़े

﴿1﴾ मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा हज़रते अली رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं : मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को मिम्बर पर फ़रमाते हुए सुना : जो कोई रात को सोते वक्त इसे (या'नी आयतुल कुरसी को) पढ़ेगा, अल्लाह पाक उसे, उस के घर को और आसपास के घरों को महफूज़ फ़रमा देगा।

(شعب الایمان، 2/458، حدیث: 2395)

शर्हे हदीस : इस की बरकत से सारे महल्ले में चोरी, आग लगाने, मकान गिर जाने बल्कि सारी ना गहानी आफ़तों से सुब्ह तक अम्न रहेगा, येह अमल बहुत मुजर्रब है।

(मिरआतुल मनाज़ीह, 2/126)

﴿2﴾ अगर इसे लिख कर फ़्रेम बनवा कर मकान में ऊंची जगह लगा देंगे तो إِنَّ شَاءَ اللَّهُ उस घर में कभी फ़ाका न होगा बल्कि रोज़ी में बरकत होगी और उस मकान में कभी चोर न आ सकेगा।

(मदनी पंजसूरह, स. 30)

﴿3﴾ “يَا جَلِيلُ” 10 बार पढ़ कर अपने मालो अस्बाब और रक़म वगैरा पर दम कर दीजिये, إِنَّ شَاءَ اللهُ चोरी से महफूज़ रहेगा। (मदनी पंजसूरह, स. 289)

﴿4﴾ “सूरतुत्तौबह” लिख या लिखवा कर, प्लास्टिक कोर्टिंग करवा कर, अपने सामान में रखिये ! إِنَّ شَاءَ اللهُ चोरी से महफूज़ रहेगा।

(चिड़िया और अन्धा सांप, स. 29)

﴿5﴾ माल चोरी या गुम हो जाए, येह आयते मुबारका बे शुमार पढ़ने से मिल जाएगा, إِنَّ شَاءَ اللهُ।

يُبَيِّنُ أَنهَآ إِن تَكْ وَمُتَقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ حَرْدَلٍ فَنُكُنْ فِي صَحْرَةٍ أَوْ فِي السَّلَوَاتِ أَوْ فِي الْأَرْضِ
يَأْتِيهَا اللهُ إِنَّ اللهُ لَطِيفٌ حَبِيرٌ ﴿١٦﴾ (پ 21، التّمن: 16)

(चिड़िया और अन्धा सांप, स. 29)

﴿6﴾ अगर रात को सोते वक़्त 21 मरतबा “بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ” पढ़ लें तो إِنَّ شَاءَ اللهُ मालो अस्बाब चोरी से महफूज़ रहेंगे और मर्गे ना गहानी (या'नी अचानक मौत) से भी हिफ़ाज़त होगी। (जन्नती ज़ेवर, स. 579)

शजरए अत्तारिय्या की मदनी बहार

एक इस्लामी भाई सिल्लिसलए कादिरिय्या अत्तारिय्या में मुरीद थे, उन्होंने ने क़सम खाते हुए बयान दिया कि एक मरतबा उन के ओफ़िस में डाकू आ गए और अस्लहा निकाल कर लूटना शुरू कर दिया। उन की अन्दर की जेब में नव्वे हज़ार (90000) रुपै थे जब कि आगे की जेब में चन्द नोट थे। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ! वोह मुत्मइन थे क्यूं कि उन्होंने ने अपने शजरए कादिरिय्या रजविय्या अत्तारिय्या से येह दुआ पढ़ ली थी :

“بِسْمِ اللهِ عَلَى دِينِي بِسْمِ اللهِ عَلَى نَفْسِي وَوُلْدِي وَوَأَهْلِي وَمَالِي”

इस दुआ की फ़ज़ीलत यह है कि जो कोई सुब्हो शाम तीन तीन बार पढ़ ले तो उस का दीन, ईमान, जान, माल और बच्चे सब महफूज़ रहते हैं ।
(अल वज़ीफ़तुल करीमा, स. 13)

इतने में एक डाकू उन के करीब आया और उन की जेब से पचास (50) रुपै निकाल लिये, वोह सोचने लगे कि 90 हज़ार हों या पचास (50) रुपै, इस दुआ की बरकत से तो सब की हिफ़ाज़त होनी चाहिये, अभी वोह येह सोच ही रहे थे कि डाकू लाखों रुपै लूट कर जाने लगे तो वोही “डाकू” जिस ने उन की जेब से 50 रुपै निकाले थे, उन के करीब आया और येह कहते हुए कि मौलाना ! क्या याद करोगे पचास रुपै वापस जेब में डाल दिये ।

ऐ निगहबान मेरे तुझ पे सलात और सलाम दो जहां में तेरे बन्दे हैं सलामत महफूज़

(जौके ना'त, स. 147)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआत, आ'रास और जुलूसे मीलाद वगैरा में मक्तबतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोहफ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने महल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या मदनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये ।

फ़ेहरिस्त

उन्वान	सफ़हा नम्बर	उन्वान	सफ़हा नम्बर
सातवें आस्मान का फ़िरिश्ता	1	चोर, डाकू से बड़ा ज़ालिम	16
चोरों और डाकूओं के मज़ालिम	3	क़त्ले नाहक़ का गुनाह	16
डाकूओं का अन्जाम	5	क़त्ले नाहक़ का अज़ाब	17
चोरी किसे कहते हैं ?	6	महशर में ज़िल्लतो रुस्वाई	18
इस्लामी सज़ाओं की हिक्मत	6	शहादत का दरजा	18
जुल्मन लोगों का		ख़ूब सूरत सोच	18
माल लेने के मुतअल्लिक		चोर को दुआ	19
7 फ़रामीने मुस्तफ़ा <small>صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ</small>	7	जुल्म पर सब्र की फ़ज़ीलत	20
पूरे काफ़िले को अकेले		डाकू की तौबा	20
लूटने वाला डाकू	11	हलाल कमाइये	21
भाई भाई बन जाओ !	13	बड़ी बड़ी मूँछों वाला बद मआश	22
बद नसीब लोग	13	चोर, डाकू से हिफ़ज़त के	
डाकू वली बन गया	15	6 वजीफ़े	24
जहन्नम का ख़ौलता हुवा पानी	15	शजरए अन्तारिय्या की मदनी बहार	25

اگلے ہفتے کا ریسالہ

”نیکی کی دعوت“
سے 52 مدنی پھول



- 1. نیکی کی دعوت
- 2. نیکی کی دعوت کا سفر
- 3. نیکی کی دعوت کا سفر
- 4. نیکی کی دعوت کا سفر

محمد ایس عطاء آبادی رضوی
مکتبہ المدینہ

DAWAE SLAMI
INDIA



Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid,
Delhi-110006 ☎ +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi
Post Office, Mumbai-400003 ☎ +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha,
Mirzapur, Ahmedabad-380001 ☎ +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar
Road, Mominpura, Nagpur-440008 ☎ +91-9326310099

☎ www.maktabatulmadina.in ☎ feedbackmmhind@gmail.com

✦ For Home Delivery of Books Please Contact on (TSC Apply) ☎ +91-9978626025